International Journal of Applied Research 2021; 7(2): 155-156

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(2): 155-156
www.allresearchjournal.com
Received: 18-12-2020
Accepted: 12-01-2021

शैलजा शर्मा
पीएच. डी. शोधार्थी, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, बिहार, चेन्नई, तमिल नाडु, भारत

Corresponding Author:
शैलजा शर्मा
पीएच. डी. शोधार्थी, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, बिहार, चेन्नई, तमिल नाडु, भारत

देख कबीरा रोया में चित्रित समस्याए

शैलजा शर्मा

प्रस्तावना

भगवतीशरण मिश्र का ऐतिहासिक उपन्यास "देख कबीरा रोया" संत कबीर के जीवन चरित्र पर आधारित है। यह उपन्यास निर्गुण भक्ति को समर्पित है। इस उपन्यास में लेखक ने कबीर की हिन्दू–मुसलमान एकता की विचारधारा का वर्णन किया है। कबीर ने एकता का संदेश दिया था। उन्होंने "इंसानियत ही एकमात्र धर्म है" का समर्थन किया था। जहाँ कबीर की धर्म के प्रति विशाल विचारधारा थी वहीं उनके लिए नारी विष के समान थी। उन्होंने नारियों को नरक का द्वार बताया तथा उनकी संकीर्ण विचारधारा ने महिलाओं के लिए दोहों के द्वारा विष–वमन किया है।

लेखक ने धनिया नामक एक काल्पनिक पात्र रचा है जो कबीर की पूजा करती थी और उसे अपना पति मानती थी। जब कबीर ने अपनी पत्नी लोई से विचार–विमर्श किया तब [1] लोई ने कहा, "पर नारियों के विरूद्ध तुमने कितना विष उगला है पता है न? उसे तुमने विष–फल भी कहा है। ठीक ही तो कह रही है धनिया, नारी अगर विष है तो वह तुम्हारे समान अमृत–संत को कैसे जान गई? क्यों नहीं अब भी जवाब देते उसके प्रश्न का?"

कबीर जैसे संत भी नारियों को समझने में चूक गए। जहाँ मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है वहाँ नारी किधर से विष–बेल कह दी गई? नरों ने अपने मन से नारियों को एक दायरे में बाँध देता है और यदि नारी इस तथाकथित दायरे से आगे बढ़ना चाहती है तब उसे चरित्रहीन, बागी आदि उपमाओं से सुसज्जित कर दिया जाता है। यह तो आदमी की दुर्बलता होती है कि वह किसी महिला को अपने से आगे बढ़ते नहीं देख सकता है। इसलिए वह अनेक प्रकार के ताने कस देता है।

लेखक ने कबीर और तुलसीदास के दोहों के माध्यम से मनुष्य को जीवन जीने की कला बताई है। [2] लो, अगर तुम आस्तिक बनने की सोच रहे हो तो तुलसी का वह महामंत्र तुम्हारे सामने है–

भाव कु भाव अनख आलस हू।
राम जपत मंगल दिसि दस हू।।

.....तो तुलसी के इस कथन का मतलब यह है कि राम का नाम लेते ही चारों तरफ मंगल ही मंगल छा जाता है। सर्वत्र कुशल ही कुशल.....

लेखक ने कबीर के माध्यम से वर्तमान समय की समस्याओं को भी उजागर किया है। [3] .....भीड़ लगातार बढ़ती जा रही थी। उस समय, आजकल की तरह, लाउडस्पीकर, अपने लेखक महोदय की विशुद्ध हिन्दी में कहें तो ध्वनि–विस्तारक यंत्र तो थे नहीं कि मैं उसके माध्यम से अपनी बात दूर–दूर तक फैला देता?.....हाँ, यह बात अलग है कि आज का समय होता तो यह भीड़ उतनी बड़ी नहीं होती कि मैं अपनी सारी शक्ति को भरकर भी सब तक अपनी बात नहीं पहुँचा सकता था। आज तो आपने आबादी इतनी बढ़ा ली है कि सड़कों पर चलते समय एक–दूसरे से टकराकर कंधे छिलते हैं।.....

....कुछ दिनों में तो सभी मुँहों के लिए आप भोजन तक नहीं जुटा पाएँगे। कुछ संयम–नियम से काम लीजीए। आत्म–नियंत्रण से। .....एक समस्या का निराकरण करते हैं तो कई नई समस्याएँ खड़ी कर देते हैं। युवक–युवतियों में फैली वासनाजनित उच्छृंखलता के मूल में तो आपके ये आधुनिक जन्म–नियंत्रण है। पूरी–की–पूरी पीढ़ी दिग्भ्रमित हो रही है।.....इस प्रकार कबीर के द्वारा लेखक ने बढ़ती जनसंख्या की समस्या एवं उसके कारण अपने विचार व्यक्त किए हैं।

[4] तो धनिया को भी उसका प्राप्य मिल गया, उसका भान उसे हो या नहीं। कबीर इस महान और त्याग–मूर्ति देवी के प्रति श्रद्धा से भर आया था। दूसरे अर्थ में वह उससे सर्वथा विशुद्ध और सात्विक प्रेम करने लगे थे।

इस स्त्री से मैंने बहुत कुछ सीखा था– त्याग का असली स्वरूप और प्रेम का यथार्थ रूप। सब कुछ छोड़ वह मेरे आंगन में आ पड़ी थी मेरे प्रेमवश। यही करना था मुझे भी, सबकुछ भूलकर राम के मन–प्रांगण बस जाना था अथवा राम को ही अपने मन के आंगन में बैठा लेना था।.....

यहाँ कबीर के द्वारा लेखक ने मनुष्य जन्म के ध्येय को स्पष्ट किया है। मानव तन पाकर भी यदि स्थूल सुख–सुविधाओं को एकत्रित करने में समय व्यतीत कर दिया तो मानव तन धारण करना व्यर्थ हुआ।

[5] मेरे दोस्तों, मैंने यह पाया कि आप में बहुत–से लोग इसलिए खफा हैं कि मैं राम–नाम का दीवाना हूँ। बंदापरवर की यह ख्वाहिश कतई नहीं कि उसके नामों में भेद किया जाए। राम, रहीम, किशन, केशव, अल्लाह, परवरदिगार, सब उसी के नाम हैं राम–नाम लेना मेरी मजबूरी है क्योंकि सद्गुरू की महिमा अनंत है और सद्गुरू से मैंने, राम–नाम की दीक्षा ली है। मैं गुरू और गोविंद में गुरू को श्रेष्ठ मानता हूँ।

गुरू गोविंद दोनों खड़े, काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरू आपकी, गोविंद दियो बताय।।

यहाँ लेखक ने हिन्दू और मुसलमानों की इबादत करने के तरीके को एक मानते हैं। परमपिता परमात्मा तो एक ही है चाहे किसी भी नाम से याद करो। गुरू श्रेष्ठ इसलिए हैं क्योंकि उन्होंने साधारण मनुष्य को भी परमपिता से मिलने का रास्ता बता दिया।

लेखक ने समाज में व्याप्त वर्ण–व्यवस्था को स्पष्ट किया है। [6] .... .स्वामीजी आरम्भ हुए, "श्रीकृष्ण ने स्वयं गीता में कहा है कि चारों वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और शूद्र) मेरे ही द्वारा सृष्ट किए गए हैं। किंतु गुण और कर्म के आधार पर। अर्थात् जन्म के आधार पर किसी का जाति–निर्धारण शास्त्र सम्मत नहीं।....." वर्तमान समय में सामाजिक असामानता का कारण यह जाति–भेद ही है। कौशल एवं कर्म के आधार पर यदि लोगों को काम मिलने लगे तो अनेक समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

लेखक ने नारियों के सम्मान के एक अलग ही रूप का वर्णन किया है। [7] "अगर भारती नहीं होती तो महापंडित मंडन मिश्र तो आदि शंकराचार्य के समक्ष पराजित हो ही चुके थे। नारी जैसा कि कहा गया कि शक्ति–स्वरूपा है। व्यक्ति की ऊर्जा। उसकी प्रेरक शक्ति। अब हम पर है कि हम नारी को किस रूप में देखते हैं। वह तो हमारी इच्छा के रूप में ढलने के लिए ही बनी है। लता कब तक वृक्ष से बैर लेकर जीवित रह सकती है? उसी तरह नारी, पुरूष की इच्छा के अनुसार अपने व्यक्तित्व को गढ़ने के लिए सदा तत्पर रहती है। अगर पुरूष ही उसे गलत सांचे में ढालता है उसका उपयोग मात्र शय्या–संगिनी के रूप में करता है, उसे अपनी प्रेरणा नहीं बनाकर, कामग्रस्त हो वह उसे अपने पैर की बेड़ियाँ बनाकर बैठता है तो इसमें नारी का क्या दोष?"

वर्जमान समय में विशेषकर जब पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से नारियों को भोग्या के रूप में ही देखा जाता है, वहाँ लेखक ने प्रेरक के रूप में प्रस्तुत किया है।

कबीर की विचारधारा धर्म को लेकर विस्तृत थी। उन्होंने धर्म के सच्चे स्वरूप से लोगों का परिचय करवाया है। [8] एक शाम एक अच्छी खासी भीड़ को मैंने संबोधित किया– "आप सभी इसलाम के उपासक हैं। इससे मेरा कोई ऐतराज नहीं पर मुहम्मद साहब ने मुसलमानों के लिए नियम बनाए हैं उनसे आप भटक गए हैं। आपको मालूम है कि मुहम्मद साहब ने एक ईश्वर को छोड़कर किसी और की उपासना करनेवाले को कुफ्र (प्रपंची) की संज्ञा दी है। वह मूर्ति–पूजा के सख्त विरोधी थे। पर आप तो कब्र–पूजा कर रहें हैं। क्यों? क्या ये कब्रें आपसे बोलती हैं? सजीव हैं ये, जो आपके मनोकामनाओं की पूर्ति करती हैं? क्या रखा है इन पत्थरों में? खुदा? वह यहाँ क्यों आने लगाा? उसका तो खुद का कोई रूप नहीं। निर्गुण, निराकार है वह। तब इन साकार कब्रों पर सिर क्यों पटकते हो?"

यहाँ लोग आज अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए धर्म को तोड़–मरोड़ कर पेश कर रहे हैं या उसका इस्तेमाल कर रहे हैं। ईश्वर ने तो मनुष्य को बनाया किंतु मनुष्य ने धर्म के नाम पर ईश्वर को ही बाँट दिया। वह यह समझ नहीं पाता कि ईश्वर तो एक है किंतु उसको भजने के उसका सुमिरन करने के तरीके भिन्न–भिन्न हैं।

उपसंहारः

भगवतीशरण मिश्र ने अपने पात्रों के माध्यम से अनेक समस्याओं का वर्णन किया है और अपनी ओर से सुझाव दिए हैं। अब आवश्यकता है पाठकों की कि वे जागरूक होकर समस्याओं के समाधान निकालें और धरती को रहने के लिए एक सुंदर स्थान बनाएँ।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. देख कबीरा रोया, राजपाल एण्ड सन्ज़, पृ. सं. 168
2. देख कबीरा रोया, राजपाल एण्ड सन्ज़, पृ. सं. 171
3. देख कबीरा रोया, राजपाल एण्ड सन्ज़, पृ. सं. 173
4. देख कबीरा रोया, राजपाल एण्ड सन्ज़, पृ. सं. 223
5. देख कबीरा रोया, राजपाल एण्ड सन्ज़, पृ. सं. 226
6. देख कबीरा रोया, राजपाल एण्ड सन्ज़, पृ. सं. 237
7. देख कबीरा रोया, राजपाल एण्ड सन्ज़, पृ. सं. 265
8. देख कबीरा रोया, राजपाल एण्ड सन्ज़, पृ. सं. 279